**BSB Corinthians Unique Words - Numerical**

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | Sosthenes | 1C 1: 1 | will of God, and our brother **Sosthenes**, | | Confirmed | 1C 1: 6 | about Christ was **confirmed** in you. | | Await | 1C 1: 7 | as you eagerly **await** the revelation of | | Blameless | 1C 1: 8 | that you will be **blameless** on the day of | | Sustain | 1C 1: 8 | He will **sustain** you to the end, so that | | Agree | 1C 1:10 | all of you **agree** together, so that | | Conviction | 1C 1:10 | may be united in mind and **conviction**. | | United | 1C 1:10 | you may be **united** in mind and | | Chloe’s | 1C 1:11 | some from **Chloe's** household have | | Quarrels | 1C 1:11 | me that there are **quarrels** among you. | | Individuals | 1C 1:12 | mean is this: **Individuals** among you are | | Crispus | 1C 1:14 | any of you except **Crispus** and Gaius, | | Gaius | 1C 1:14 | any of you except Crispus and **Gaius**, | | Baptizing | 1C 1:16 | I do not remember **baptizing** anyone else. | | Remember | 1C 1:16 | I do not **remember** baptizing anyone else. | | Eloquent | 1C 1:17 | gospel, not with **eloquent** words of wisdom, | | Emptied | 1C 1:17 | cross of Christ be **emptied** of its power. | | Lest | 1C 1:17 | words of wisdom, **lest** the cross of | | Frustrate | 1C 1:19 | of the intelligent I will **frustrate.|** | | Intelligence | 1C 1:19 | wise; the **intelligence** of the | | Intelligent | 1C 1:19 | of the **intelligent** I will | | Philosopher | 1C 1:20 | Where is the **philosopher** of this age? | | Scribe | 1C 1:20 | Where is the **scribe**? Where is the | | Search | 1C 1:22 | demand signs and Greeks **search** for wisdom, | | Strength | 1C 1:25 | of God is stronger than man's **strength**. | | Wiser | 1C 1:25 | of God is **wiser** than man's wisdom, | | Calling | 1C 1:26 | the time of your **calling**: Not many of you | | Noble | 1C 1:26 | powerful; not many were of **noble** birth. | | Despised | 1C 1:28 | the lowly and **despised** things of the | | Lowly | 1C 1:28 | He chose the **lowly** and despised things of | | Redemption | 1C 1:30 | righteousness, holiness, and **redemption**. | | Eloquence | 1C 2: 1 | did not come with **eloquence** or wisdom as I | | Demonstration | 1C 2: 4 | but with a **demonstration** of the Spirit's | | Persuasive | 1C 2: 4 | were not with **persuasive** words of wisdom, | | Spirit’s | 1C 2: 4 | a demonstration of the **Spirit's** power, | | Destined | 1C 2: 7 | God, which He **destined** for our glory | | Mysterious | 1C 2: 7 | speak of the **mysterious** and hidden wisdom | | Imagined | 1C 2: 9 | no heart has **imagined**, what God has | | Searches | 1C 2:10 | The Spirit **searches** all things, | | Expressing | 1C 2:13 | the Spirit, **expressing** spiritual truths | | Truths | 1C 2:13 | expressing spiritual **truths** in spiritual | | Accept | 1C 2:14 | man does not **accept** the things that | | Discerned | 1C 2:14 | because they are spiritually **discerned**. | | Spiritually | 1C 2:14 | because they are **spiritually** discerned. | | Address | 1C 3: 1 | I could not **address** you as spiritual, | | Dissension | 1C 3: 3 | is jealousy and **dissension** among you, are | | Walking | 1C 3: 3 | worldly? Are you not **walking** in the way of | | Mere | 1C 3: 4 | |I follow Apollos,| are you not **mere** men? | | Role | 1C 3: 5 | Lord has assigned to each his **role**. | | Planted | 1C 3: 6 | I **planted** the seed and Apollos watered it, | | Watered | 1C 3: 6 | seed and Apollos **watered** it, but God | | Rewarded | 1C 3: 8 | each will be **rewarded** according to his | | Builder | 1C 3:10 | a wise master **builder**, and someone else | | Master | 1C 3:10 | as a wise **master** builder, and someone | | Lay | 1C 3:11 | For no one can **lay** a foundation other than | | Gold | 1C 3:12 | foundation using **gold**, silver, precious | | Hay | 1C 3:12 | precious stones, wood, **hay**, or straw, | | Precious | 1C 3:12 | gold, silver, **precious** stones, wood, | | Silver | 1C 3:12 | using gold, **silver**, precious stones, | | Stones | 1C 3:12 | silver, precious **stones**, wood, hay, | | Straw | 1C 3:12 | precious stones, wood, hay, or **straw**, | | Using | 1C 3:12 | this foundation **using** gold, silver, | | Wood | 1C 3:12 | precious stones, **wood**, hay, or | | Evident | 1C 3:13 | will be **evident**, because the | | Quality | 1C 3:13 | will prove the **quality** of each man's | | Survives | 1C 3:14 | he has built **survives**, he will receive | | Burned | 1C 3:15 | If it is **burned** up, he will suffer loss. | | Loss | 1C 3:15 | up, he will suffer **loss**. He himself will be | | Snatched | 1C 3:15 | only as one being **snatched** from the fire. | | Suffer | 1C 3:15 | up, he will **suffer** loss. He himself | | Dwells | 1C 3:16 | and that God's Spirit **dwells** in you? | | Destroys | 1C 3:17 | If anyone **destroys** God's temple, God will | | Deceive | 1C 3:18 | Let no one **deceive** himself. If any of you | | Catches | 1C 3:19 | is written: |He **catches** the wise in | | Craftiness | 1C 3:19 | |He catches the wise in their **craftiness.|** | | Future | 1C 3:22 | present or the **future**. All of them | | Required | 1C 4: 2 | Now it is **required** of stewards that they | | Court | 1C 4: 3 | or by any human **court**. In fact, I do | | Vindicate | 1C 4: 4 | but that does not **vindicate** me. It is the | | Expose | 1C 4: 5 | darkness and will **expose** the motives of | | Applied | 1C 4: 6 | Brothers, I have **applied** these things to | | Learn | 1C 4: 6 | so that you may **learn** from us not to | | Superior | 1C 4: 7 | who makes you so **superior**? What do you have | | Displayed | 1C 4: 9 | that God has **displayed** us apostles at | | Prisoners | 1C 4: 9 | procession, like **prisoners** appointed for | | Procession | 1C 4: 9 | of the **procession**, like prisoners | | Seems | 1C 4: 9 | For it **seems** to me that God has displayed | | Spectacle | 1C 4: 9 | have become a **spectacle** to the whole | | Dishonored | 1C 4:10 | You are honored, but we are **dishonored**. | | Brutally | 1C 4:11 | clad, we are **brutally** treated, we are | | Clad | 1C 4:11 | we are poorly **clad**, we are brutally | | Homeless | 1C 4:11 | we are brutally treated, we are **homeless**. | | Poorly | 1C 4:11 | thirsty, we are **poorly** clad, we are | | Thirsty | 1C 4:11 | are hungry and **thirsty**, we are poorly | | Hard | 1C 4:12 | We work **hard** with our own hands. When we | | Vilified | 1C 4:12 | When we are **vilified**, we bless; when | | Gently | 1C 4:13 | slandered, we answer **gently**. Up to this | | Moment | 1C 4:13 | Up to this **moment** we have become | | Refuse | 1C 4:13 | of the earth, the **refuse** of the world. | | Scum | 1C 4:13 | we have become the **scum** of the earth, the | | Slandered | 1C 4:13 | when we are **slandered**, we answer gently. | | Fathers | 1C 4:15 | not have many **fathers**; for in Christ | | Guardians | 1C 4:15 | have ten thousand **guardians** in Christ, you | | Exactly | 1C 4:17 | Jesus, which is **exactly** what I teach | | Shortly | 1C 4:19 | will come to you **shortly**, if the Lord is | | Talk | 1C 4:20 | God is not a matter of **talk** but of power. | | Gentle | 1C 4:21 | or in love and with a **gentle** spirit? | | Rod | 1C 4:21 | come to you with a **rod**, or in love and with | | Father’s | 1C 5: 1 | among pagans: A man has his **father's** wife. | | Intolerable | 1C 5: 1 | kind that is **intolerable** even among pagans: | | Reported | 1C 5: 1 | It is actually **reported** that there is | | Stricken | 1C 5: 2 | rather have been **stricken** with grief and | | Pronounced | 1C 5: 3 | I have already **pronounced** judgment on the | | Destruction | 1C 5: 5 | Satan for the **destruction** of the flesh, | | Dough | 1C 5: 6 | yeast leavens the whole batch of **dough**? | | Leavens | 1C 5: 6 | a little yeast **leavens** the whole batch | | Lamb | 1C 5: 7 | our Passover **lamb**, has been | | Passover | 1C 5: 7 | For Christ, our **Passover** lamb, has been | | Rid | 1C 5: 7 | Get **rid** of the old yeast, that you | | Festival | 1C 5: 8 | let us keep the **festival**, not with the old | | Leavened | 1C 5: 8 | the old bread, **leavened** with malice and | | Malice | 1C 5: 8 | leavened with **malice** and wickedness, | | Including | 1C 5:10 | I was not **including** the sexually immoral | | Leave | 1C 5:10 | case you would have to **leave** this world. | | Abuser | 1C 5:11 | or a verbal **abuser**, a drunkard or | | Claims | 1C 5:11 | with anyone who **claims** to be a | | Drunkard | 1C 5:11 | verbal abuser, a **drunkard** or a swindler. | | Idolater | 1C 5:11 | or greedy, an **idolater** or a verbal | | Swindler | 1C 5:11 | a drunkard or a **swindler**. With such a man | | Business | 1C 5:12 | What **business** of mine is it to judge | | Inside | 1C 5:12 | Are you not to judge those **inside**? | | Expel | 1C 5:13 | judge those outside. |**Expel** the wicked man | | Grievance | 1C 6: 1 | you has a **grievance** against another, how | | Unrighteous | 1C 6: 1 | before the **unrighteous** instead of | | Trivial | 1C 6: 2 | you not competent to judge **trivial** cases? | | Appoint | 1C 6: 4 | matters, do you **appoint** as judges those | | Everyday | 1C 6: 4 | need to settle **everyday** matters, do you | | Settle | 1C 6: 4 | you need to **settle** everyday matters, do | | Arbitrate | 1C 6: 5 | enough to **arbitrate** between his | | Front | 1C 6: 6 | another, and this in **front** of unbelievers! | | Goes | 1C 6: 6 | Instead, one brother **goes** to law against | | Cheated | 1C 6: 7 | be wronged? Why not rather be **cheated**? | | Defeated | 1C 6: 7 | are thoroughly **defeated** already. Why | | Lawsuits | 1C 6: 7 | that you have **lawsuits** among you means | | Thoroughly | 1C 6: 7 | you are **thoroughly** defeated already. | | Cheat | 1C 6: 8 | Instead, you yourselves **cheat** and do wrong, | | Adulterers | 1C 6: 9 | nor idolaters, nor **adulterers**, nor men who | | Homosexual | 1C 6: 9 | who submit to or perform **homosexual** acts, | | Perform | 1C 6: 9 | who submit to or **perform** homosexual acts, | | Abusers | 1C 6:10 | nor verbal **abusers**, nor swindlers, | | Drunkards | 1C 6:10 | greedy, nor **drunkards**, nor verbal | | Thieves | 1C 6:10 | nor **thieves**, nor the greedy, nor | | Justified | 1C 6:11 | sanctified, you were **justified**, in the name | | Washed | 1C 6:11 | But you were **washed**, you were sanctified, | | Mastered | 1C 6:12 | but I will not be **mastered** by anything. | | Unite | 1C 6:15 | of Christ and **unite** them with a | | Abstain | 1C 7: 1 | is good to **abstain** from sexual relations. | | Relations | 1C 7: 1 | is good to abstain from sexual **relations**. | | Duty | 1C 7: 3 | fulfill his marital **duty** to his wife, | | Fulfill | 1C 7: 3 | The husband should **fulfill** his marital duty | | Marital | 1C 7: 3 | should fulfill his **marital** duty to his | | Consent | 1C 7: 5 | except by mutual **consent** for a limited | | Deprive | 1C 7: 5 | Do not **deprive** one another, except by | | Devote | 1C 7: 5 | so you may **devote** yourselves to prayer. | | Limited | 1C 7: 5 | consent for a **limited** time, so you | | Self-control | 1C 7: 5 | you through your lack of **self-control**. | | Tempt | 1C 7: 5 | Satan will not **tempt** you through your | | Concession | 1C 7: 6 | say this as a **concession**, not as a command. | | Widows | 1C 7: 8 | to the unmarried and **widows** I say this: It | | Passion | 1C 7: 9 | to marry than to burn with **passion**. | | Leaves | 1C 7:15 | if the unbeliever **leaves**, let him go. | | Sister | 1C 7:15 | believing brother or **sister** is not bound | | Lead | 1C 7:17 | each one should **lead** the life that | | Prescribe | 1C 7:17 | is what I **prescribe** in all the | | Regardless | 1C 7:17 | **Regardless**, each one should lead the life | | Circumcision | 1C 7:19 | **Circumcision** is nothing and uncircumcision | | Commandments | 1C 7:19 | Keeping God's **commandments** is what | | Uncircumcision | 1C 7:19 | nothing and **uncircumcision** is nothing. | | Conversely | 1C 7:22 | the Lord's freedman. **Conversely**, he who was | | Freedman | 1C 7:22 | is the Lord's **freedman**. Conversely, he who | | Slaves | 1C 7:23 | at a price; do not become **slaves** of men. | | Trustworthy | 1C 7:25 | who by the Lord's mercy is **trustworthy**. | | Virgins | 1C 7:25 | Now about **virgins**, I have no command from | | Crisis | 1C 7:26 | of the present **crisis**, I think it | | Commitment | 1C 7:27 | Are you free of **commitment**? Do not look for | | Look | 1C 7:27 | of commitment? Do not **look** for a wife. | | Released | 1C 7:27 | not seek to be **released**. Are you free of | | Wives | 1C 7:29 | on those who have **wives** should live as if | | Joyful | 1C 7:30 | not; those who are **joyful**, as if they were | | Purchase | 1C 7:30 | those who make a **purchase**, as if they had | | Weep | 1C 7:30 | those who **weep**, as if they did not; those | | Dependent | 1C 7:31 | as if not **dependent** on them. For | | Interests | 1C 7:34 | and his **interests** are divided. The | | Decorum | 1C 7:35 | promote proper **decorum** and undivided | | Promote | 1C 7:35 | in order to **promote** proper decorum and | | Restrict | 1C 7:35 | own good, not to **restrict** you, but in order | | Undivided | 1C 7:35 | decorum and **undivided** devotion to | | Acting | 1C 7:36 | he is **acting** inappropriately toward | | Betrothed | 1C 7:36 | toward his **betrothed**, and if | | Inappropriately | 1C 7:36 | is acting **inappropriately** toward his | | Youth | 1C 7:36 | she is beyond her **youth** and they ought to | | Constraint | 1C 7:37 | and under no **constraint**, with control over | | Resolve | 1C 7:37 | over his will and **resolve** in his heart not | | Happier | 1C 7:40 | however, she is **happier** if she remains | | Puffs | 1C 8: 1 | knowledge. Knowledge **puffs** up, but | | Lords | 1C 8: 5 | there are many so-called gods and **lords**), | | Accustomed | 1C 8: 7 | are still so **accustomed** to idols that | | Defiled | 1C 8: 7 | their conscience is weak, it is **defiled**. | | Closer | 1C 8: 8 | does not bring us **closer** to God: We are | | Idol’s | 1C 8:10 | eating in an **idol's** temple, will he | | Wounding | 1C 8:12 | way and **wounding** their weak | | Cause | 1C 8:13 | so that I will not **cause** him to stumble. | | Causes | 1C 8:13 | if what I eat **causes** my brother to stumble, | | Apostleship | 1C 9: 2 | the seal of my **apostleship** in the Lord. | | Scrutinize | 1C 9: 3 | is my defense to those who **scrutinize** me: | | Barnabas | 1C 9: 6 | Or are **Barnabas** and I the only apostles | | Expense | 1C 9: 7 | at his own **expense**? Who plants a | | Flock | 1C 9: 7 | fruit? Who tends a **flock** and does not drink | | Fruit | 1C 9: 7 | not eat of its **fruit**? Who tends a flock | | Serves | 1C 9: 7 | Who **serves** as a soldier at his own | | Soldier | 1C 9: 7 | Who serves as a **soldier** at his own expense? | | Tends | 1C 9: 7 | of its fruit? Who **tends** a flock and does | | Vineyard | 1C 9: 7 | Who plants a **vineyard** and does not | | Perspective | 1C 9: 8 | from a human **perspective**? Doesn't the Law | | Grain | 1C 9: 9 | treading out the **grain.|** Is it about | | Muzzle | 1C 9: 9 | of Moses: |Do not **muzzle** an ox while it | | Ox | 1C 9: 9 | |Do not muzzle an **ox** while it is treading | | Oxen | 1C 9: 9 | Is it about **oxen** that God is | | Treading | 1C 9: 9 | ox while it is **treading** out the grain.| Is | | Isn'T | 1C 9:10 | **Isn't** He actually speaking on our behalf? | | Plowman | 1C 9:10 | because when the **plowman** plows and the | | Plows | 1C 9:10 | when the plowman **plows** and the thresher | | Thresher | 1C 9:10 | and the **thresher** threshes, they | | Threshes | 1C 9:10 | and the thresher **threshes**, they should also | | Material | 1C 9:11 | us to reap a **material** harvest from you? | | Exercise | 1C 9:12 | we did not **exercise** this right. Instead, | | Hinder | 1C 9:12 | anything rather than **hinder** the gospel of | | Offerings | 1C 9:13 | at the altar partake of its **offerings**? | | Prescribed | 1C 9:14 | the Lord has **prescribed** that those who | | Suggest | 1C 9:15 | writing this to **suggest** that something be | | Used | 1C 9:15 | But I have not **used** any of these rights. | | Obligated | 1C 9:16 | because I am **obligated** to preach. Woe | | Woe | 1C 9:16 | I am obligated to preach. **Woe** to me if I do | | Entrusted | 1C 9:17 | I am still **entrusted** with a responsibility. | | Responsibility | 1C 9:17 | am still entrusted with a **responsibility**. | | Obligation | 1C 9:19 | I am free of **obligation** to anyone, I make | | Jew | 1C 9:20 | I became like a **Jew**, to win the Jews. | | Blessings | 1C 9:23 | that I may share in its **blessings**. | | Race | 1C 9:24 | know that in a **race** all the runners run, | | Receives | 1C 9:24 | but only one **receives** the prize? Run | | Runners | 1C 9:24 | a race all the **runners** run, but only one | | Competes | 1C 9:25 | Everyone who **competes** in the games trains | | Games | 1C 9:25 | competes in the **games** trains with strict | | Strict | 1C 9:25 | trains with **strict** discipline. They | | Trains | 1C 9:25 | in the games **trains** with strict discipline. | | Aimlessly | 1C 9:26 | I do not run **aimlessly**; I do not fight | | Beating | 1C 9:26 | do not fight like I am **beating** the air. | | Fight | 1C 9:26 | aimlessly; I do not **fight** like I am beating | | Disqualified | 1C 9:27 | others, I myself will not be **disqualified**. | | Forefathers | 1C 10: 1 | that our **forefathers** were all | | Ate | 1C 10: 3 | They all **ate** the same spiritual food | | Accompanied | 1C 10: 4 | rock that **accompanied** them, and | | Nevertheless | 1C 10: 5 | **Nevertheless**, God was not pleased with | | Wilderness | 1C 10: 5 | they were struck down in the **wilderness**. | | Craving | 1C 10: 6 | to keep us from **craving** evil things as they | | Place | 1C 10: 6 | These things took **place** as examples to | | Got | 1C 10: 7 | and to drink, and **got** up to revel in | | Revel | 1C 10: 7 | drink, and got up to **revel** in idolatry.| | | Sat | 1C 10: 7 | is written: |The people **sat** down to eat and | | Twenty-three | 1C 10: 8 | in one day **twenty-three** thousand of them | | Snakes | 1C 10: 9 | them did, and were killed by **snakes**. | | Complain | 1C 10:10 | And do not **complain**, as some of them did, | | Destroying | 1C 10:10 | and were killed by the **destroying** angel. | | Ages | 1C 10:11 | whom the fulfillment of the **ages** has come. | | Fulfillment | 1C 10:11 | us, on whom the **fulfillment** of the ages has | | Happened | 1C 10:11 | Now these things **happened** to them as | | Warnings | 1C 10:11 | written down as **warnings** for us, on | | Escape | 1C 10:13 | also provide an **escape**, so that you | | Provide | 1C 10:13 | He will also **provide** an escape, so | | Seized | 1C 10:13 | No temptation has **seized** you except what | | Temptation | 1C 10:13 | No **temptation** has seized you except what | | Reasonable | 1C 10:15 | I speak to **reasonable** people; judge for | | Break | 1C 10:16 | bread that we **break** a participation in | | Israel | 1C 10:18 | the people of **Israel**: Are not those | | Partakers | 1C 10:18 | sacrifices fellow **partakers** in the | | Suggesting | 1C 10:19 | Am I **suggesting**, then, that food | | Participants | 1C 10:20 | want you to be **participants** with demons. | | Provoke | 1C 10:22 | we trying to **provoke** the Lord to | | Edifying | 1C 10:23 | but not everything is **edifying**. | | Market | 1C 10:25 | the meat **market** without raising | | Sold | 1C 10:25 | Eat anything **sold** in the meat market | | Fullness | 1C 10:26 | is the Lord's, and the **fullness** thereof.| | | Thereof | 1C 10:26 | is the Lord's, and the fullness **thereof.|** | | Invites | 1C 10:27 | If an unbeliever **invites** you to a meal and | | Tells | 1C 10:28 | But if someone **tells** you, |This food was | | Determined | 1C 10:29 | my freedom be **determined** by someone else's | | Else’s | 1C 10:29 | determined by someone **else's** conscience? | | One’s | 1C 10:29 | the other **one's** conscience, I mean, not | | Denounced | 1C 10:30 | why am I **denounced** because of that | | Thankfulness | 1C 10:30 | the meal with **thankfulness**, why am I | | Whatever | 1C 10:31 | eat or drink or **whatever** you do, do it | | Maintaining | 1C 11: 2 | and for **maintaining** the traditions, | | Remembering | 1C 11: 2 | you for **remembering** me in | | Traditions | 1C 11: 2 | for maintaining the **traditions**, just as I | | Covered | 1C 11: 4 | with his head **covered** dishonors his head. | | Created | 1C 11: 9 | Neither was man **created** for woman, but | | Born | 1C 11:12 | also man is **born** of woman. But | | Disgrace | 1C 11:14 | has long hair, it is a **disgrace** to him, | | Itself | 1C 11:14 | Doesn't nature **itself** teach you that if a | | Nature | 1C 11:14 | Doesn't **nature** itself teach you that if a | | Covering | 1C 11:15 | is given to her as a **covering**. | | Dispute | 1C 11:16 | is inclined to **dispute** this, we have | | Following | 1C 11:17 | In the **following** instructions I have no | | Gatherings | 1C 11:17 | offer, because your **gatherings** do more harm | | Harm | 1C 11:17 | your gatherings do more **harm** than good. | | Hear | 1C 11:18 | First of all, I **hear** that when you come | | Differences | 1C 11:19 | there must be **differences** among you to | | Drunk | 1C 11:21 | one remains hungry, another gets **drunk**. | | Exclusion | 1C 11:21 | meal to the **exclusion** of others. While | | Gets | 1C 11:21 | one remains hungry, another **gets** drunk. | | Proceed | 1C 11:21 | eat, many of you **proceed** with your own meal | | Course | 1C 11:22 | I praise you for this? Of **course** not! | | Despise | 1C 11:22 | drink? Or do you **despise** the church of God | | Homes | 1C 11:22 | you have your own **homes** in which to eat | | Humiliate | 1C 11:22 | of God and **humiliate** those who have | | Betrayed | 1C 11:23 | on the night He was **betrayed**, took bread, | | Broke | 1C 11:24 | given thanks, He **broke** it and said, | | Guilty | 1C 11:27 | manner will be **guilty** of sinning against | | Recognizing | 1C 11:29 | drinks without **recognizing** the body | | Number | 1C 11:30 | and sick, and a **number** of you have fallen | | Sick | 1C 11:30 | you are weak and **sick**, and a number of | | Properly | 1C 11:31 | we judged ourselves **properly**, we would not | | Condemned | 1C 11:32 | we will not be **condemned** with the world. | | Disciplined | 1C 11:32 | we are being **disciplined** so that we | | Remaining | 1C 11:34 | instructions about the **remaining** matters. | | Uninformed | 1C 12: 1 | do not want you to be **uninformed**. | | Influenced | 1C 12: 2 | pagans, you were **influenced** and led astray | | Mute | 1C 12: 2 | influenced and led astray to **mute** idols. | | Cursed | 1C 12: 3 | God says, |Jesus be **cursed,|** and no one can | | Inform | 1C 12: 3 | Therefore I **inform** you that no one who is | | Ministries | 1C 12: 5 | are different **ministries**, but the | | Works | 1C 12: 6 | but the same God **works** all things in all | | Manifestation | 1C 12: 7 | each one the **manifestation** of the Spirit | | Distinguishing | 1C 12:10 | to another **distinguishing** between spirits, | | Apportions | 1C 12:11 | same Spirit, who **apportions** them to each | | Determines | 1C 12:11 | them to each one as He **determines**. | | Comprised | 1C 12:12 | though it is **comprised** of many parts. | | Unit | 1C 12:12 | The body is a **unit**, though it is comprised | | Consist | 1C 12:14 | the body does not **consist** of one part, but | | Foot | 1C 12:15 | If the **foot** should say, |Because I am not | | Hearing | 1C 12:17 | would the sense of **hearing** be? If the whole | | Smell | 1C 12:17 | ear, where would the sense of **smell** be? | | Arranged | 1C 12:18 | fact, God has **arranged** the members of | | Design | 1C 12:18 | one of them, according to His **design**. | | Indispensable | 1C 12:22 | that seem to be weaker are **indispensable**, | | Weaker | 1C 12:22 | that seem to be **weaker** are indispensable, | | Honorable | 1C 12:23 | we consider less **honorable**, we treat with | | Modesty | 1C 12:23 | parts are treated with special **modesty**, | | Special | 1C 12:23 | parts are treated with **special** modesty, | | Unpresentable | 1C 12:23 | And our **unpresentable** parts are | | Composed | 1C 12:24 | need. But God has **composed** the body and has | | Lacked | 1C 12:24 | greater honor to the parts that **lacked** it, | | Presentable | 1C 12:24 | whereas our **presentable** parts have no such | | Whereas | 1C 12:24 | **whereas** our presentable parts have no such | | Division | 1C 12:25 | should be no **division** in the body, | | Member | 1C 12:27 | and each of you is a **member** of it. | | Administration | 1C 12:28 | healing, helping, **administration**, and various | | Helping | 1C 12:28 | of healing, **helping**, administration, and | | Clanging | 1C 13: 1 | only a ringing gong or a **clanging** cymbal. | | Cymbal | 1C 13: 1 | a ringing gong or a clanging **cymbal**. | | Gong | 1C 13: 1 | only a ringing **gong** or a clanging | | Ringing | 1C 13: 1 | I am only a **ringing** gong or a clanging | | Absolute | 1C 13: 2 | and if I have **absolute** faith so as to | | Fathom | 1C 13: 2 | prophecy and can **fathom** all mysteries and | | Mountains | 1C 13: 2 | so as to move **mountains**, but have not love, | | Move | 1C 13: 2 | faith so as to **move** mountains, but have not | | Exult | 1C 13: 3 | to the poor and **exult** in the surrender of | | Possess | 1C 13: 3 | I give all I **possess** to the poor and | | Surrender | 1C 13: 3 | and exult in the **surrender** of my body, but | | Envy | 1C 13: 4 | kind. It does not **envy**, it does not boast, | | Angered | 1C 13: 5 | is not easily **angered**, it keeps no | | Keeps | 1C 13: 5 | easily angered, it **keeps** no account of | | Rude | 1C 13: 5 | It is not **rude**, it is not self-seeking, it | | Self-seeking | 1C 13: 5 | it is not **self-seeking**, it is not | | Wrongs | 1C 13: 5 | angered, it keeps no account of **wrongs**. | | Pleasure | 1C 13: 6 | Love takes no **pleasure** in evil, but | | Bears | 1C 13: 7 | It **bears** all things, believes all things, | | Believes | 1C 13: 7 | all things, **believes** all things, | | Hopes | 1C 13: 7 | all things, **hopes** all things, | | Cease | 1C 13: 8 | they will **cease**; where there | | Dismissed | 1C 13: 8 | there is knowledge, it will be **dismissed**. | | Fails | 1C 13: 8 | Love never **fails**. But where there are | | Prophecies | 1C 13: 8 | there are **prophecies**, they will | | Partial | 1C 13:10 | perfect comes, the **partial** passes away. | | Passes | 1C 13:10 | perfect comes, the partial **passes** away. | | Childish | 1C 13:11 | became a man, I set aside **childish** ways. | | Reasoned | 1C 13:11 | like a child, I **reasoned** like a child. When | | Talked | 1C 13:11 | was a child, I **talked** like a child, I | | Dim | 1C 13:12 | we see but a **dim** reflection as in a | | Mirror | 1C 13:12 | as in a **mirror**; then we shall | | Reflection | 1C 13:12 | see but a dim **reflection** as in a mirror; | | Greatest | 1C 13:13 | love; but the **greatest** of these is | | Pursue | 1C 14: 1 | Earnestly **pursue** love and eagerly desire | | Understands | 1C 14: 2 | Indeed, no one **understands** him; he utters | | Utters | 1C 14: 2 | understands him; he **utters** mysteries in the | | Edification | 1C 14: 3 | for their **edification**, encouragement, and | | Interprets | 1C 14: 5 | tongues, unless he **interprets**, so that the | | Distinct | 1C 14: 7 | are playing unless the notes are **distinct**? | | Flute | 1C 14: 7 | such as the **flute** or harp, how | | Harp | 1C 14: 7 | the flute or **harp**, how will anyone | | Instruments | 1C 14: 7 | case of lifeless **instruments**, such as the | | Lifeless | 1C 14: 7 | the case of **lifeless** instruments, such as | | Notes | 1C 14: 7 | are playing unless the **notes** are distinct? | | Playing | 1C 14: 7 | tune they are **playing** unless the notes | | Recognize | 1C 14: 7 | how will anyone **recognize** the tune they | | Tune | 1C 14: 7 | anyone recognize the **tune** they are playing | | Battle | 1C 14: 8 | muffled call, who will prepare for **battle**? | | Muffled | 1C 14: 8 | trumpet sounds a **muffled** call, who will | | Prepare | 1C 14: 8 | muffled call, who will **prepare** for battle? | | Sounds | 1C 14: 8 | if the trumpet **sounds** a muffled call, | | Intelligible | 1C 14: 9 | you speak **intelligible** words with | | Assuredly | 1C 14:10 | **Assuredly**, there are many different | | Languages | 1C 14:10 | are many different **languages** in the world, | | Language | 1C 14:11 | meaning of someone's **language**, I am a | | Someone’s | 1C 14:11 | the meaning of **someone's** language, I am | | Strive | 1C 14:12 | have spiritual gifts, **strive** to excel in | | Unfruitful | 1C 14:14 | spirit prays, but my mind is **unfruitful**. | | Coherent | 1C 14:19 | speak five **coherent** words to | | Foreign | 1C 14:21 | strange tongues and **foreign** lips I will | | Lips | 1C 14:21 | tongues and foreign **lips** I will speak | | Strange | 1C 14:21 | the Law: |By **strange** tongues and foreign | | Convicted | 1C 14:24 | he will be **convicted** and called to | | Prophesying | 1C 14:24 | while everyone is **prophesying**, he will be | | Facedown | 1C 14:25 | he will fall **facedown** and worship God, | | Proclaiming | 1C 14:25 | and worship God, **proclaiming**, |God is truly | | Secrets | 1C 14:25 | and the **secrets** of his heart will be | | Truly | 1C 14:25 | proclaiming, |God is **truly** among you!| | | Worship | 1C 14:25 | facedown and **worship** God, proclaiming, | | Psalm | 1C 14:26 | everyone has a **psalm** or a teaching, | | Interpreter | 1C 14:28 | there is no **interpreter**, he should remain | | Carefully | 1C 14:29 | others should weigh **carefully** what is said. | | Weigh | 1C 14:29 | the others should **weigh** carefully what is | | Seated | 1C 14:30 | someone who is **seated**, the first speaker | | Instructed | 1C 14:31 | everyone may be **instructed** and encouraged. | | Congregations | 1C 14:33 | As in all the **congregations** of the saints, | | Submission | 1C 14:34 | but must be in **submission**, as the Law says. | | Women | 1C 14:34 | **women** are to be silent in the | | Dishonorable | 1C 14:35 | home; for it is **dishonorable** for a woman to | | Husbands | 1C 14:35 | to ask their own **husbands** at home; for it | | Inquire | 1C 14:35 | they wish to **inquire** about something, they | | Ones | 1C 14:36 | Or are you the only **ones** it has reached? | | Originate | 1C 14:36 | Did God's word **originate** with you? Or are | | Reached | 1C 14:36 | you the only ones it has **reached**? | | Acknowledge | 1C 14:37 | person, let him **acknowledge** that what I | | Considers | 1C 14:37 | If anyone **considers** himself a prophet or | | Prophet | 1C 14:37 | himself a **prophet** or spiritual | | Ignored | 1C 14:38 | ignores this, he himself will be **ignored**. | | Ignores | 1C 14:38 | But if anyone **ignores** this, he himself | | Forbid | 1C 14:39 | and do not **forbid** speaking in tongues. | | Orderly | 1C 14:40 | be done in a proper and **orderly** manner. | | Importance | 1C 15: 3 | as of first **importance**: that Christ died | | Buried | 1C 15: 4 | that He was **buried**, that He was raised on | | Twelve | 1C 15: 5 | to Cephas and then to the **Twelve**. | | Hundred | 1C 15: 6 | more than five **hundred** brothers at once, | | James | 1C 15: 7 | Then He appeared to **James**, then to all the | | Untimely | 1C 15: 8 | me also, as to one of **untimely** birth. | | Least | 1C 15: 9 | For I am the **least** of the apostles and am | | Worked | 1C 15:10 | in vain. No, I **worked** harder than all of | | Worthless | 1C 15:14 | our preaching is **worthless**, and so is | | Exposed | 1C 15:15 | we are also **exposed** as false witnesses | | Testified | 1C 15:15 | For we have **testified** about God that | | Perished | 1C 15:18 | fallen asleep in Christ have **perished**. | | Alone | 1C 15:19 | is for this life **alone**, we are to be | | Pitied | 1C 15:19 | we are to be **pitied** more than all men. | | Dominion | 1C 15:24 | destroyed all **dominion**, authority, and | | Enemies | 1C 15:25 | He has put all His **enemies** under His feet. | | Reign | 1C 15:25 | For He must **reign** until He has put all His | | Enemy | 1C 15:26 | The last **enemy** to be destroyed is death. | | Clearly | 1C 15:27 | under Him, this **clearly** does not include | | Include | 1C 15:27 | clearly does not **include** the One who | | Subjected | 1C 15:28 | things have been **subjected** to Him, then | | Endanger | 1C 15:30 | why do we **endanger** ourselves every hour? | | Beasts | 1C 15:32 | I fought wild **beasts** in Ephesus for | | Fought | 1C 15:32 | If I **fought** wild beasts in Ephesus for | | Tomorrow | 1C 15:32 | us eat and drink, for **tomorrow** we die.| | | Wild | 1C 15:32 | If I fought **wild** beasts in Ephesus for | | Character | 1C 15:33 | |Bad company corrupts good **character.|** | | Company | 1C 15:33 | deceived: |Bad **company** corrupts good | | Corrupts | 1C 15:33 | |Bad company **corrupts** good character.| | | Ignorant | 1C 15:34 | some of you are **ignorant** of God. I say | | Sober | 1C 15:34 | **Sober** up as you ought, and stop | | Wheat | 1C 15:37 | seed, perhaps of **wheat** or something else. | | Designed | 1C 15:38 | body as He has **designed**, and to each kind | | Animals | 1C 15:39 | kind of flesh, **animals** have another, birds | | Birds | 1C 15:39 | have another, **birds** another, and | | Fish | 1C 15:39 | another, birds another, and **fish** another. | | Differs | 1C 15:41 | another; and star **differs** from star in | | Moon | 1C 15:41 | of splendor, the **moon** another, and the | | Stars | 1C 15:41 | another, and the **stars** another; and star | | Sun | 1C 15:41 | The **sun** has one degree of splendor, the | | Life-giving | 1C 15:45 | the last Adam a **life-giving** spirit. | | Dust | 1C 15:47 | man was of the **dust** of the earth, the | | Borne | 1C 15:49 | just as we have **borne** the likeness of the | | Declare | 1C 15:50 | Now I **declare** to you, brothers, that flesh | | Mystery | 1C 15:51 | I tell you a **mystery**: We will not all | | Instant | 1C 15:52 | in an **instant**, in the twinkling of an eye, | | Twinkling | 1C 15:52 | an instant, in the **twinkling** of an eye, at | | Pass | 1C 15:54 | will come to **pass**: |Death has been | | Immovable | 1C 15:58 | be steadfast and **immovable**. Always excel in | | Steadfast | 1C 15:58 | brothers, be **steadfast** and immovable. | | Collection | 1C 16: 1 | Now about the **collection** for the saints, | | Directed | 1C 16: 1 | do as I **directed** the churches of | | Galatia | 1C 16: 1 | as I directed the churches of **Galatia**: | | Collections | 1C 16: 2 | when I come no **collections** will be needed. | | Income | 1C 16: 2 | a portion of his **income**, saving it up, so | | Needed | 1C 16: 2 | I come no collections will be **needed**. | | Portion | 1C 16: 2 | set aside a **portion** of his income, | | Saving | 1C 16: 2 | of his income, **saving** it up, so | | Week | 1C 16: 2 | first day of every **week**, each of you should | | Jerusalem | 1C 16: 3 | recommend to carry your gift to **Jerusalem**. | | Recommend | 1C 16: 3 | with those you **recommend** to carry your | | Advisable | 1C 16: 4 | And if it is **advisable** for me to go also, | | Travel | 1C 16: 4 | me to go also, they can **travel** with me. | | Going | 1C 16: 5 | for I will be **going** through Macedonia. | | Awhile | 1C 16: 6 | stay with you **awhile**, or even spend | | Journey | 1C 16: 6 | help me on my **journey**, wherever I may go. | | Wherever | 1C 16: 6 | help me on my journey, **wherever** I may go. | | Winter | 1C 16: 6 | or even spend the **winter**, so that you can | | Permits | 1C 16: 7 | time with you, if the Lord **permits**. | | Pentecost | 1C 16: 8 | I will stay in Ephesus until **Pentecost**, | | Effective | 1C 16: 9 | great door for **effective** work has opened | | Opened | 1C 16: 9 | effective work has **opened** to me, even | | Oppose | 1C 16: 9 | opened to me, even though many **oppose** me. | | Contempt | 1C 16:11 | treat him with **contempt**. Send him on | | Expecting | 1C 16:11 | me, for I am **expecting** him along with the | | Strongly | 1C 16:12 | brother Apollos: I **strongly** urged him to | | Alert | 1C 16:13 | Be on the **alert**. Stand firm in the faith. | | Courage | 1C 16:13 | the faith. Be men of **courage**. Be strong. | | Converts | 1C 16:15 | were the first **converts** in Achaia, and | | Devoted | 1C 16:15 | and they have **devoted** themselves to the | | Laborer | 1C 16:16 | and to every fellow worker and **laborer**. | | Achaicus | 1C 16:17 | Fortunatus, and **Achaicus** have arrived, | | Fortunatus | 1C 16:17 | that Stephanas, **Fortunatus**, and Achaicus | | Glad | 1C 16:17 | I am **glad** that Stephanas, Fortunatus, and | | Appreciation | 1C 16:18 | Show your **appreciation**, therefore, to | | Aquila | 1C 16:19 | send you greetings. **Aquila** and Prisca greet | | Meets | 1C 16:19 | does the church that **meets** at their house. | | Prisca | 1C 16:19 | Aquila and **Prisca** greet you | | Warmly | 1C 16:19 | Prisca greet you **warmly** in the Lord, | | Greeting | 1C 16:21 | This **greeting** is in my own hand--Paul. | | Curse | 1C 16:22 | him be under a divine **curse**. Come, O Lord! | | Throughout | 2C 1: 1 | with all the saints **throughout** Achaia: | | Blessed | 2C 1: 3 | **Blessed** be the God and Father of | | Compassion | 2C 1: 3 | the Father of **compassion** and the God | | Trouble | 2C 1: 4 | those in any **trouble** with the comfort | | Accomplishes | 2C 1: 6 | comfort, which **accomplishes** in you | | Afflicted | 2C 1: 6 | If we are **afflicted**, it is for your | | Experience | 2C 1: 6 | of the same sufferings we **experience**. | | Sure | 2C 1: 7 | hope for you is **sure**, because we know that | | Despaired | 2C 1: 8 | endure, so that we **despaired** even of life. | | Encountered | 2C 1: 8 | hardships we **encountered** in the | | Raises | 2C 1: 9 | but in God, who **raises** the dead. | | Sentence | 2C 1: 9 | were under the **sentence** of death, in | | Trust | 2C 1: 9 | we would not **trust** in ourselves, but | | Deadly | 2C 1:10 | us from such a **deadly** peril, and He will | | Delivered | 2C 1:10 | He has **delivered** us from such a deadly | | Peril | 2C 1:10 | such a deadly **peril**, and He will | | Shown | 2C 1:11 | behalf for the favor **shown** us in answer to | | Conducted | 2C 1:12 | that we have **conducted** ourselves in the | | Relation | 2C 1:12 | and especially in **relation** to you, in | | Testifies | 2C 1:12 | Our conscience **testifies** that we | | Completely | 2C 1:13 | hope that you will understand **completely**, | | Double | 2C 1:15 | that you might receive a **double** blessing. | | Judea | 2C 1:16 | help me on my way to **Judea**. | | Carelessly | 2C 1:17 | did I do it **carelessly**? Or do I make | | Plans | 2C 1:17 | do I make my **plans** by human standards, so | | Silvanus | 2C 1:19 | you by me and **Silvanus** and Timothy, was not | | Anointed | 2C 1:21 | us and you in Christ. He **anointed** us, | | Establishes | 2C 1:21 | it is God who **establishes** both us and you | | Witness | 2C 1:23 | call God as my **witness** that it was in | | Painful | 2C 2: 1 | not to make another **painful** visit to you. | | Cheer | 2C 2: 2 | who is left to **cheer** me but those whom | | Saddened | 2C 2: 3 | I would not be **saddened** by those who ought | | Anguish | 2C 2: 4 | great distress and **anguish** of heart, not | | Distress | 2C 2: 4 | out of great **distress** and anguish of | | Tears | 2C 2: 4 | For through many **tears** I wrote you out of | | Overstate | 2C 2: 5 | you--to some degree, not to **overstate** it. | | Imposed | 2C 2: 6 | The punishment **imposed** on him by the | | Majority | 2C 2: 6 | him by the **majority** is sufficient for | | Punishment | 2C 2: 6 | The **punishment** imposed on him by the | | Excessive | 2C 2: 7 | not be overwhelmed by **excessive** sorrow. | | Overwhelmed | 2C 2: 7 | not be **overwhelmed** by excessive | | Reaffirm | 2C 2: 8 | I urge you to **reaffirm** your love for him. | | Outwit | 2C 2:11 | that Satan should not **outwit** us. For we are | | Schemes | 2C 2:11 | we are not unaware of his **schemes**. | | Troas | 2C 2:12 | when I went to **Troas** to preach the gospel | | Goodbye | 2C 2:13 | there. So I said **goodbye** to them and went | | Captives | 2C 2:14 | us triumphantly as **captives** in Christ and | | Spreads | 2C 2:14 | through us **spreads** everywhere the | | Triumphantly | 2C 2:14 | always leads us **triumphantly** as captives in | | Aroma | 2C 2:15 | God the sweet **aroma** of Christ among | | Sweet | 2C 2:15 | are to God the **sweet** aroma of Christ among | | Demise | 2C 2:16 | odor of death and **demise**; to the other, a | | Odor | 2C 2:16 | one, we are an **odor** of death and demise; | | Task | 2C 2:16 | who is qualified for such a **task**? | | Peddle | 2C 2:17 | so many others, who **peddle** the word of God | | Profit | 2C 2:17 | word of God for **profit**. On the contrary, in | | Beginning | 2C 3: 1 | Are we **beginning** to commend ourselves | | Recommendation | 2C 3: 1 | people, letters of **recommendation** to you or | | Inscribed | 2C 3: 2 | are our letter, **inscribed** on our hearts, | | Ink | 2C 3: 3 | written not with **ink** but with the | | Claim | 2C 3: 5 | in ourselves to **claim** that anything comes | | Competence | 2C 3: 5 | us, but our **competence** comes from God. | | Kills | 2C 3: 6 | for the letter **kills**, but the Spirit | | Ministers | 2C 3: 6 | qualified us as **ministers** of a new | | Engraved | 2C 3: 7 | death, which was **engraved** in letters on | | Fleeting | 2C 3: 7 | of Moses because of its **fleeting** glory, | | Gaze | 2C 3: 7 | Israelites could not **gaze** at the face | | Condemnation | 2C 3: 9 | ministry of **condemnation** was glorious, | | Surpasses | 2C 3:10 | comparison to the glory that **surpasses** it. | | Gazing | 2C 3:13 | the Israelites from **gazing** at the end | | Closed | 2C 3:14 | their minds were **closed**. For to this | | Lifted | 2C 3:14 | has not been **lifted**, because only in | | Reading | 2C 3:14 | remains at the **reading** of the old | | Covers | 2C 3:15 | Moses is read, a veil **covers** their hearts. | | Taken | 2C 3:16 | to the Lord, the veil is **taken** away. | | Turns | 2C 3:16 | But whenever anyone **turns** to the Lord, the | | Whenever | 2C 3:16 | But **whenever** anyone turns to the Lord, the | | Faces | 2C 3:18 | who with unveiled **faces** all reflect the | | Intensifying | 2C 3:18 | image with **intensifying** glory, which | | Reflect | 2C 3:18 | unveiled faces all **reflect** the glory of | | Transformed | 2C 3:18 | Lord, are being **transformed** into His image | | Unveiled | 2C 3:18 | we, who with **unveiled** faces all reflect | | Deceit | 2C 4: 2 | do not practice **deceit**, nor do we | | Distort | 2C 4: 2 | deceit, nor do we **distort** the word of God. | | Proclamation | 2C 4: 2 | by open **proclamation** of the | | Renounced | 2C 4: 2 | we have **renounced** secret and | | Secret | 2C 4: 2 | we have renounced **secret** and shameful ways. | | Blinded | 2C 4: 4 | this age has **blinded** the minds of | | Clay | 2C 4: 7 | treasure in jars of **clay** to show that this | | Jars | 2C 4: 7 | have this treasure in **jars** of clay to show | | Treasure | 2C 4: 7 | Now we have this **treasure** in jars of clay | | Crushed | 2C 4: 8 | sides, but not **crushed**; perplexed, but not | | Despair | 2C 4: 8 | crushed; perplexed, but not in **despair**; | | Perplexed | 2C 4: 8 | but not crushed; **perplexed**, but not in | | Sides | 2C 4: 8 | pressed on all **sides**, but not crushed; | | Forsaken | 2C 4: 9 | but not **forsaken**; struck down, | | Around | 2C 4:10 | We always carry **around** in our body the | | Consigned | 2C 4:11 | alive are always **consigned** to death for | | Knowing | 2C 4:14 | **knowing** that the One who raised the | | Extending | 2C 4:15 | grace that is **extending** to more and | | Inner | 2C 4:16 | away, yet our **inner** self is being | | Outer | 2C 4:16 | heart. Though our **outer** self is wasting | | Renewed | 2C 4:16 | inner self is being **renewed** day by day. | | Wasting | 2C 4:16 | outer self is **wasting** away, yet our | | Affliction | 2C 4:17 | and temporary **affliction** is producing | | Outweighs | 2C 4:17 | glory that far **outweighs** our troubles. | | Producing | 2C 4:17 | temporary affliction is **producing** for us an | | Fix | 2C 4:18 | So we **fix** our eyes not on what is | | Dismantled | 2C 5: 1 | live in is **dismantled**, we have a | | Dwelling | 2C 5: 2 | to be clothed with our heavenly **dwelling**, | | Naked | 2C 5: 3 | clothed, we will not be found **naked**. | | Burdens | 2C 5: 4 | groan under our **burdens**, because we do | | Mortality | 2C 5: 4 | so that our **mortality** may be swallowed | | Unclothed | 2C 5: 4 | wish to be **unclothed** but clothed, so | | Aspire | 2C 5: 9 | So we **aspire** to please Him, whether we are | | Due | 2C 5:10 | one may receive his **due** for the things done | | Seat | 2C 5:10 | before the judgment **seat** of Christ, that | | Persuade | 2C 5:11 | Lord, we try to **persuade** men. What we are | | Commending | 2C 5:12 | We are not **commending** ourselves to you | | Compels | 2C 5:14 | For Christ's love **compels** us, because we | | Convinced | 2C 5:14 | because we are **convinced** that One died | | Creation | 2C 5:17 | he is a new **creation**. The old has passed | | Counting | 2C 5:19 | Christ, not **counting** men's trespasses | | Reconciling | 2C 5:19 | that God was **reconciling** the world to | | Trespasses | 2C 5:19 | counting men's **trespasses** against them. | | Ambassadors | 2C 5:20 | Therefore we are **ambassadors** for Christ, as | | Implore | 2C 5:20 | through us. We **implore** you on behalf | | Knew | 2C 5:21 | God made Him who **knew** no sin to be sin on | | Helped | 2C 6: 2 | of salvation I **helped** you.| Behold, now | | Discredit | 2C 6: 3 | so that no one can **discredit** our ministry. | | Obstacle | 2C 6: 3 | We put no **obstacle** in anyone's way, so | | Calamities | 2C 6: 4 | in troubles, hardships, and **calamities**; | | Nights | 2C 6: 5 | in labor, sleepless **nights**, and hunger; | | Riots | 2C 6: 5 | imprisonments, and **riots**; in labor, | | Sleepless | 2C 6: 5 | in labor, **sleepless** nights, and | | Kindness | 2C 6: 6 | patience, and **kindness**; in the | | Patience | 2C 6: 6 | purity, knowledge, **patience**, and kindness; | | Purity | 2C 6: 6 | in **purity**, knowledge, patience, and | | Sincere | 2C 6: 6 | in the Holy Spirit and in **sincere** love; | | Truthful | 2C 6: 7 | in **truthful** speech and in the power of | | Genuine | 2C 6: 8 | praise; viewed as imposters, yet **genuine**; | | Imposters | 2C 6: 8 | praise; viewed as **imposters**, yet genuine; | | Viewed | 2C 6: 8 | and praise; **viewed** as imposters, | | Dying | 2C 6: 9 | unknown, yet well-known; **dying**, and yet we | | Punished | 2C 6: 9 | yet we live on; **punished**, yet not killed; | | Unknown | 2C 6: 9 | as **unknown**, yet well-known; dying, and yet | | Well-known | 2C 6: 9 | as unknown, yet **well-known**; dying, and yet | | Possessing | 2C 6:10 | nothing, and yet **possessing** everything. | | Rejoicing | 2C 6:10 | yet always **rejoicing**; poor, yet | | Corinthians | 2C 6:11 | freely to you, **Corinthians**. Our hearts are | | Exchange | 2C 6:13 | As a fair **exchange**, I ask you as my | | Fair | 2C 6:13 | As a **fair** exchange, I ask you as my | | Partnership | 2C 6:14 | For what **partnership** can righteousness | | Unequally | 2C 6:14 | Do not be **unequally** yoked with unbelievers. | | Yoked | 2C 6:14 | be unequally **yoked** with unbelievers. | | Belial | 2C 6:15 | between Christ and **Belial**? Or what does | | Believer | 2C 6:15 | Or what does a **believer** have in common with | | Agreement | 2C 6:16 | What **agreement** can exist between the | | Touch | 2C 6:17 | says the Lord. **Touch** no unclean thing, | | Almighty | 2C 6:18 | and daughters, says the Lord **Almighty.|** | | Daughters | 2C 6:18 | My sons and **daughters**, says the Lord | | Sons | 2C 6:18 | you will be My **sons** and daughters, says the | | Cleanse | 2C 7: 1 | let us **cleanse** ourselves from | | Defiles | 2C 7: 1 | everything that **defiles** body and | | Perfecting | 2C 7: 1 | body and spirit, **perfecting** holiness in the | | Corrupted | 2C 7: 2 | no one, we have **corrupted** no one, we have | | Exploited | 2C 7: 2 | no one, we have **exploited** no one. | | Room | 2C 7: 2 | Make **room** for us in your hearts. We | | Condemn | 2C 7: 3 | not say this to **condemn** you. I have said | | Occupy | 2C 7: 3 | that you so **occupy** our hearts that | | Filled | 2C 7: 4 | you; I am **filled** with encouragement; in | | Conflicts | 2C 7: 5 | every direction--**conflicts** on the | | Direction | 2C 7: 5 | from every **direction**--conflicts on | | Fears | 2C 7: 5 | conflicts on the outside, **fears** within. | | Downcast | 2C 7: 6 | who comforts the **downcast**, comforted us by | | Mourning | 2C 7: 7 | your longing, your **mourning**, and your zeal | | Rejoiced | 2C 7: 7 | for me, so that I **rejoiced** all the more. | | Alarm | 2C 7:11 | indignation, what **alarm**, what longing, | | Indignation | 2C 7:11 | yourselves, what **indignation**, what alarm, | | Innocent | 2C 7:11 | yourselves to be **innocent** in this matter. | | Produced | 2C 7:11 | godly sorrow has **produced** in you: what | | Vindication | 2C 7:11 | what zeal, what **vindication**! In every way | | Addition | 2C 7:13 | are encouraged. In **addition** to our own | | Delighted | 2C 7:13 | we were even more **delighted** by the joy of | | Boasted | 2C 7:14 | by anything I had **boasted** to him about you. | | Embarrassed | 2C 7:14 | I was not **embarrassed** by anything I | | Remembers | 2C 7:15 | greater when he **remembers** that you were | | Welcomed | 2C 7:15 | obedient as you **welcomed** him with fear | | Abundant | 2C 8: 2 | they suffered, their **abundant** joy and deep | | Ordeal | 2C 8: 2 | In the terrible **ordeal** they suffered, their | | Overflowed | 2C 8: 2 | deep poverty **overflowed** into rich | | Suffered | 2C 8: 2 | ordeal they **suffered**, their abundant | | Terrible | 2C 8: 2 | In the **terrible** ordeal they suffered, | | Accord | 2C 8: 3 | even beyond it. Of their own **accord**, | | Testify | 2C 8: 3 | For I **testify** that they gave according to | | Privilege | 2C 8: 4 | earnestly for the **privilege** of sharing in | | Sharing | 2C 8: 4 | the privilege of **sharing** in this service | | Expected | 2C 8: 5 | do as we **expected**, but they gave | | Started | 2C 8: 6 | of grace, just as he had **started** it. | | Inspired | 2C 8: 7 | in the love we **inspired** in you--see that | | Testing | 2C 8: 8 | but I am **testing** the sincerity of | | Sakes | 2C 8: 9 | rich, yet for your **sakes** He became poor, so | | Helpful | 2C 8:10 | about what is **helpful** for you in | | Opinion | 2C 8:10 | this is my **opinion** about what is | | Finish | 2C 8:11 | Now **finish** the work, so that you may | | Acceptable | 2C 8:12 | the gift is **acceptable** according to what | | Burdened | 2C 8:13 | while you are **burdened**, but that there | | Intention | 2C 8:13 | It is not our **intention** that others may be | | Relieved | 2C 8:13 | others may be **relieved** while you are | | Excess | 2C 8:15 | much had no **excess**, and he who | | Shortfall | 2C 8:15 | he who gathered little had no **shortfall.|** | | Volition | 2C 8:17 | coming to you of his own **volition**. | | Welcome | 2C 8:17 | not only did he **welcome** our appeal, but he | | Praised | 2C 8:18 | brother who is **praised** by all the | | Accompany | 2C 8:19 | the churches to **accompany** us with the | | Chosen | 2C 8:19 | this brother was **chosen** by the churches | | Gracious | 2C 8:19 | offering--the **gracious** gift we | | Offering | 2C 8:19 | us with the **offering**--the gracious gift | | Avoid | 2C 8:20 | We hope to **avoid** any criticism of the way | | Criticism | 2C 8:20 | hope to avoid any **criticism** of the way we | | Taking | 2C 8:21 | For we are **taking** great care to do what is | | Proven | 2C 8:22 | earnestness has been **proven** many times and | | Whose | 2C 8:22 | our brother, **whose** earnestness has | | Messengers | 2C 8:23 | they are **messengers** of the | | Partner | 2C 8:23 | he is my **partner** and fellow worker | | Full | 2C 8:24 | In **full** view of the churches, then, show | | View | 2C 8:24 | In full **view** of the churches, then, show | | Stirred | 2C 9: 2 | And your zeal has **stirred** most of them to | | Empty | 2C 9: 3 | should not prove **empty**, but that you | | Unprepared | 2C 9: 4 | and find you **unprepared**, we--to say | | Arrangements | 2C 9: 5 | and make **arrangements** for the | | Beforehand | 2C 9: 5 | visit you **beforehand** and make | | Begrudgingly | 2C 9: 5 | prepared generously and not **begrudgingly**. | | Bountiful | 2C 9: 5 | arrangements for the **bountiful** gift you had | | Necessary | 2C 9: 5 | I thought it **necessary** to urge the | | Cheerful | 2C 9: 7 | For God loves a **cheerful** giver. | | Compulsion | 2C 9: 7 | of regret or **compulsion**. For God loves | | Giver | 2C 9: 7 | For God loves a cheerful **giver**. | | Able | 2C 9: 8 | And God is **able** to make all grace abound | | Abroad | 2C 9: 9 | |He has scattered **abroad** His gifts to | | Scattered | 2C 9: 9 | written: |He has **scattered** abroad His gifts | | Multiply | 2C 9:10 | will supply and **multiply** your store of | | Sower | 2C 9:10 | seed to the **sower** and bread for | | Store | 2C 9:10 | and multiply your **store** of seed and | | Supplies | 2C 9:10 | Now He who **supplies** seed to the sower and | | Supply | 2C 9:10 | for food will **supply** and multiply your | | Produce | 2C 9:11 | us will **produce** thanksgiving to | | Expressions | 2C 9:12 | in many **expressions** of thanksgiving | | Overflowing | 2C 9:12 | but is also **overflowing** in many expressions | | Supplying | 2C 9:12 | is not only **supplying** the needs of | | Confession | 2C 9:13 | for your obedient **confession** of the gospel | | Contribution | 2C 9:13 | generosity of your **contribution** to them and | | Provides | 2C 9:13 | this ministry **provides**, the saints | | Express | 2C 9:14 | for you will **express** their affection for | | Surpassing | 2C 9:14 | because of the **surpassing** grace God has | | Indescribable | 2C 9:15 | be to God for His **indescribable** gift! | | Gentleness | 2C 10: 1 | the mildness and **gentleness** of Christ, I | | Mildness | 2C 10: 1 | Now by the **mildness** and gentleness of | | Beg | 2C 10: 2 | I **beg** you that when I come, I | | Presume | 2C 10: 2 | toward those who **presume** that we live | | Wage | 2C 10: 3 | flesh, we do not **wage** war according to the | | War | 2C 10: 3 | we do not wage **war** according to the flesh. | | Demolish | 2C 10: 4 | have divine power to **demolish** strongholds. | | Strongholds | 2C 10: 4 | have divine power to demolish **strongholds**. | | Warfare | 2C 10: 4 | weapons of our **warfare** are not the | | Arguments | 2C 10: 5 | tear down **arguments**, and every | | Captive | 2C 10: 5 | and we take **captive** every thought to | | Presumption | 2C 10: 5 | and every **presumption** set up | | Tear | 2C 10: 5 | We **tear** down arguments, and every | | Disobedience | 2C 10: 6 | every act of **disobedience**, as soon as | | Obedience | 2C 10: 6 | as soon as your **obedience** is complete. | | Punish | 2C 10: 6 | be ready to **punish** every act of | | Soon | 2C 10: 6 | of disobedience, as **soon** as your obedience | | Looking | 2C 10: 7 | You are **looking** at outward appearances. If | | Outward | 2C 10: 7 | looking at **outward** appearances. If | | Excessively | 2C 10: 8 | boast somewhat **excessively** about the | | Somewhat | 2C 10: 8 | if I boast **somewhat** excessively about the | | Frighten | 2C 10: 9 | to be trying to **frighten** you by my letters. | | Forceful | 2C 10:10 | are weighty and **forceful**, but his physical | | Physical | 2C 10:10 | but his **physical** presence is | | Unimpressive | 2C 10:10 | presence is **unimpressive**, and his | | Weighty | 2C 10:10 | |His letters are **weighty** and forceful, but | | Classify | 2C 10:12 | not dare to **classify** or compare ourselves | | Ignorance | 2C 10:12 | themselves, they show their **ignorance**. | | Measure | 2C 10:12 | When they **measure** themselves by | | Reaches | 2C 10:13 | to us--a field that **reaches** even to you. | | Bounds | 2C 10:14 | not overstepping our **bounds**, as if we | | Overstepping | 2C 10:14 | We are not **overstepping** our bounds, as if | | Reach | 2C 10:14 | were the first to **reach** you with the gospel | | Area | 2C 10:15 | increases, our **area** of influence | | Greatly | 2C 10:15 | among you will **greatly** increase as well, | | Increases | 2C 10:15 | as your faith **increases**, our area of | | Labors | 2C 10:15 | our limits in the **labors** of others. But we | | Territory | 2C 10:16 | already done in another man's **territory**. | | Jealous | 2C 11: 2 | I am **jealous** for you with a godly | | Cunning | 2C 11: 3 | by the serpent's **cunning**, your minds may | | Eve | 2C 11: 3 | that just as **Eve** was deceived by | | Serpent’s | 2C 11: 3 | by the **serpent's** cunning, your | | Simple | 2C 11: 3 | astray from your **simple** and pure devotion | | Accepted | 2C 11: 4 | than the one you **accepted**, you put up with | | Proclaims | 2C 11: 4 | someone comes and **proclaims** a Jesus other | | Certainly | 2C 11: 6 | speaker, I am **certainly** not lacking in | | Polished | 2C 11: 6 | I am not a **polished** speaker, I am certainly | | Exalt | 2C 11: 7 | in order to **exalt** you, because I | | Accepting | 2C 11: 8 | churches by **accepting** their support | | Robbed | 2C 11: 8 | I **robbed** other churches by accepting their | | Continue | 2C 11: 9 | in any way, and I will **continue** to do so. | | Refrained | 2C 11: 9 | needs. I have **refrained** from being a | | Silenced | 2C 11:10 | mine will not be **silenced** in the regions of | | Equals | 2C 11:12 | regarded as our **equals** in the things | | Undercut | 2C 11:12 | in order to **undercut** those who want | | Deceitful | 2C 11:13 | false apostles, **deceitful** workers, masquerading | | Masquerading | 2C 11:13 | deceitful workers, **masquerading** as apostles | | Masquerades | 2C 11:14 | for Satan himself **masquerades** as an angel | | Wonder | 2C 11:14 | And no **wonder**, for Satan himself | | Correspond | 2C 11:15 | Their end will **correspond** to their actions. | | Masquerade | 2C 11:15 | if his servants **masquerade** as servants of | | Surprising | 2C 11:15 | It is not **surprising**, then, if his | | Repeat | 2C 11:16 | I **repeat**: Let no one take me for | | Tolerate | 2C 11:19 | For you gladly **tolerate** fools, since you | | Advantage | 2C 11:20 | you or takes **advantage** of you or | | Enslaves | 2C 11:20 | with anyone who **enslaves** you or exploits | | Exalts | 2C 11:20 | of you or **exalts** himself or strikes | | Exploits | 2C 11:20 | enslaves you or **exploits** you or takes | | Strikes | 2C 11:20 | exalts himself or **strikes** you in the | | Concede | 2C 11:21 | To my shame I **concede** that we were too | | Dares | 2C 11:21 | what anyone else **dares** to boast about. | | Match | 2C 11:21 | however, I can **match** what anyone else | | Abraham | 2C 11:22 | Are they descendants of **Abraham**? So am I. | | Descendants | 2C 11:22 | I. Are they **descendants** of Abraham? So | | Hebrews | 2C 11:22 | Are they **Hebrews**? So am I. Are they | | Forty | 2C 11:24 | from the Jews the **forty** lashes minus one. | | Lashes | 2C 11:24 | from the Jews the forty **lashes** minus one. | | Minus | 2C 11:24 | from the Jews the forty lashes **minus** one. | | Beaten | 2C 11:25 | Three times I was **beaten** with rods, once I | | Rods | 2C 11:25 | I was beaten with **rods**, once I was stoned, | | Shipwrecked | 2C 11:25 | times I was **shipwrecked**. I spent a | | Spent | 2C 11:25 | I was shipwrecked. I **spent** a night and a | | Stoned | 2C 11:25 | rods, once I was **stoned**, three times I was | | Bandits | 2C 11:26 | rivers and from **bandits**, in danger from | | Country | 2C 11:26 | city and in the **country**, in danger on the | | Countrymen | 2C 11:26 | danger from my **countrymen** and from the | | Journeys | 2C 11:26 | In my frequent **journeys**, I have been in | | Rivers | 2C 11:26 | in danger from **rivers** and from bandits, | | Cold | 2C 11:27 | often without food, in **cold** and exposure. | | Exposure | 2C 11:27 | often without food, in cold and **exposure**. | | Thirst | 2C 11:27 | in hunger and **thirst** and often without | | Toil | 2C 11:27 | in labor and **toil** and often without sleep, | | Apart | 2C 11:28 | **Apart** from these external trials, I face | | Daily | 2C 11:28 | trials, I face **daily** the pressure of | | External | 2C 11:28 | Apart from these **external** trials, I face | | Pressure | 2C 11:28 | I face daily the **pressure** of my concern for | | Trials | 2C 11:28 | from these external **trials**, I face daily | | Lying | 2C 11:31 | praise, knows that I am not **lying**. | | Worthy | 2C 11:31 | who is forever **worthy** of praise, knows | | Aretas | 2C 11:32 | governor under King **Aretas** secured the city | | Arrest | 2C 11:32 | of the Damascenes in order to **arrest** me. | | Damascenes | 2C 11:32 | city of the **Damascenes** in order to | | Damascus | 2C 11:32 | In **Damascus**, the governor under King | | Governor | 2C 11:32 | In Damascus, the **governor** under King Aretas | | King | 2C 11:32 | the governor under **King** Aretas secured the | | Secured | 2C 11:32 | under King Aretas **secured** the city of | | Basket | 2C 11:33 | was lowered in a **basket** through a window in | | Escaped | 2C 11:33 | window in the wall and **escaped** his grasp. | | Grasp | 2C 11:33 | in the wall and escaped his **grasp**. | | Lowered | 2C 11:33 | But I was **lowered** in a basket through a | | Wall | 2C 11:33 | a window in the **wall** and escaped his grasp. | | Window | 2C 11:33 | a basket through a **window** in the wall and | | Visions | 2C 12: 1 | go on to **visions** and revelations from | | Ago | 2C 12: 2 | who fourteen years **ago** was caught up | | Fourteen | 2C 12: 2 | in Christ who **fourteen** years ago was | | Years | 2C 12: 2 | Christ who fourteen **years** ago was caught | | Paradise | 2C 12: 4 | caught up into **Paradise**. The things he | | Sacred | 2C 12: 4 | heard were too **sacred** for words, things | | Credit | 2C 12: 6 | so no one will **credit** me with more than | | Hears | 2C 12: 6 | than he sees in me or **hears** from me, | | Refrain | 2C 12: 6 | the truth. But I **refrain**, so no one will | | Becoming | 2C 12: 7 | keep me from **becoming** conceited, I was | | Conceited | 2C 12: 7 | me from becoming **conceited**, I was given | | Messenger | 2C 12: 7 | my flesh, a **messenger** of Satan, to | | Thorn | 2C 12: 7 | I was given a **thorn** in my flesh, a | | Torment | 2C 12: 7 | a messenger of Satan, to **torment** me. | | Perfected | 2C 12: 9 | power is **perfected** in weakness.| | | Delight | 2C 12:10 | of Christ, I **delight** in weaknesses, in | | Difficulties | 2C 12:10 | persecutions, in **difficulties**. For when | | Insults | 2C 12:10 | in weaknesses, in **insults**, in hardships, in | | Persecutions | 2C 12:10 | hardships, in **persecutions**, in difficulties. | | Commended | 2C 12:11 | you should have **commended** me, since I | | Drove | 2C 12:11 | a fool, but you **drove** me to it. In | | Marks | 2C 12:12 | The true **marks** of an apostle--signs, | | Performed | 2C 12:12 | miracles--were **performed** among you | | Perseverance | 2C 12:12 | among you with great **perseverance**. | | Wonders | 2C 12:12 | apostle--signs, **wonders**, and miracles-- | | Possessions | 2C 12:14 | seeking your **possessions**, but you | | Money | 2C 12:15 | most gladly spend my **money** and myself. If I | | Souls | 2C 12:15 | the sake of your **souls**, I will most gladly | | Crafty | 2C 12:16 | burden to you; but **crafty** as I am, I | | Trickery | 2C 12:16 | I am, I caught you by **trickery**. | | Overreach | 2C 12:17 | Did I **overreach** by anyone I sent you? | | Exploit | 2C 12:18 | with him. Did Titus **exploit** you in any way? | | Footsteps | 2C 12:18 | spirit and follow in the same **footsteps**? | | Arrogance | 2C 12:20 | slander, gossip, **arrogance**, and disorder. | | Gossip | 2C 12:20 | rivalry, slander, **gossip**, arrogance, and | | Quarreling | 2C 12:20 | may be **quarreling**, jealousy, rage, | | Rage | 2C 12:20 | quarreling, jealousy, **rage**, rivalry, slander, | | Rivalry | 2C 12:20 | jealousy, rage, **rivalry**, slander, gossip, | | Debauchery | 2C 12:21 | sexual immorality, and **debauchery**. | | Impurity | 2C 12:21 | acts of **impurity**, sexual immorality, | | Repented | 2C 12:21 | and have not **repented** of their acts | | Absence | 2C 13: 2 | So now in my **absence**, I warn those who | | Warned | 2C 13: 2 | I already **warned** you the second time I was | | Dealing | 2C 13: 3 | is not weak in **dealing** with you, but is | | Demanding | 2C 13: 3 | since you are **demanding** proof that Christ | | Can'T | 2C 13: 5 | faith; test yourselves. **Can't** you see for | | Fail | 2C 13: 5 | you--unless you actually **fail** the test? | | Realize | 2C 13: 6 | I hope you will **realize** that we have not | | Perfection | 2C 13: 9 | and our prayer is for your **perfection**. | | Severe | 2C 13:10 | will not need to be **severe** in my use of the | | Aim | 2C 13:11 | brothers, rejoice! **Aim** for perfect | | Encourage | 2C 13:11 | perfect harmony, **encourage** one another, | | Finally | 2C 13:11 | **Finally**, brothers, rejoice! Aim for | |  |  |
|  |  |  |
|  |  |  |
|  |  |  |
|  |  |  |